❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा बिभेर्न मरिष्यसि।।
अथर्व. 5/30/8
हे आत्मन्! डर मत, तू मरेगा नहीं।
O soul! be not araid ! you will not die.

वर्ष 40, अंक 40 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 जुलाई, 2017 से रविवार 6 अगस्त, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

श्रावणी पर्व/वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक आयोजित करें युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित करें

1. यज्ञ के अवसर पर युवा जोड़ों को यजमान अवश्य बनाएं तथा उन्हें आर्यसमाज का सरल साहित्य भेंट करें।
2. वेद कथा के अवसर पर आर्यवीर सम्मेलन व युवा सम्मेलन का आयोजन अवश्य करें।
3. युवाओं के लिए प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम अवश्य आयोजित करें जिससे युवा वर्ग अपनी शंकाओं का समाधान विद्वानों से करा सकें।
4. मंच संचालन के कार्य युवाओं को सौंपे जिससे उन्हें कार्यक्रमों में आने तथा आयोजित करने के लिए उत्साह एवं बल मिल सके।

वैदिक धर्म में स्वाध्याय को प्रत्येक वर्ण और आश्रम व्यवस्था के लिए अनिवार्य और आवश्यक रूप से प्रधान बताया गया है। ब्राह्मण वर्ग और ब्रह्मचर्य आश्रम की कल्पना ही स्वाध्याय के साथ जुड़ी है

अर्थात् विद्यार्थियों का स्वाध्याय से विमुख रहना समाज के लिए किसी दृष्टि से भी हितकर नहीं हो सकता।

क्षत्रिय वर्ग अर्थात् देश की रक्षा करने वाले पुलिस और सैन्य बल तथा शासन चलाने वाले उच्चाधिकारी लोग भी यदि स्वाध्यायशील रहें तो देश की आन्तरिक और बाहरी सुरक्षा तथा अनुशासन स्थापित करने में अवश्य ही सहायता मिलेगी। वैश्य वर्ग यदि स्वाध्यायशील रहता है तो देश की व्यापारिक गतिविधियों को सात्विक उन्नति प्राप्त होगी। इसी प्रकार शूद्र वर्ग भी स्वाध्याय के सहारे केवल अपना ही नहीं अपितु अपने आस-पास के समाज को भी सद्व्यवहार के द्वारा सुगन्धित कर सकता है।

इस वर्ष **रक्षा बन्धन (सोमवार) 7 अगस्त, 2017** को तथा **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (मंगलवार) 15 अगस्त, 2017** को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह आर्यसमाजों द्वारा वेद प्रचार समारोह के रूप में मनाया जाता है।

वेद प्रचार समारोह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। यदि वेद प्रचार समारोह को उत्साहपूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनाया जाए तो ज्ञान गंगा घर-घर में पहुंचाई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् विश्व

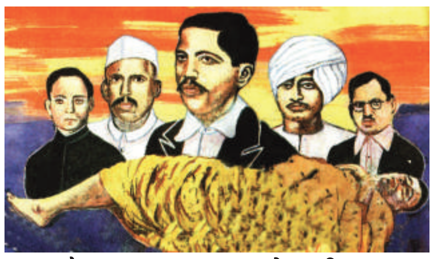
हैदराबाद सत्याग्रह के शहीद

को श्रेष्ठ बनाना ही वेद प्रचार समारोह का भी प्रयोजन होना चाहिए।

वेद प्रचार समारोह को सफल बनाने के लिए अपनी सुविधानुसार निम्न उपायों में से अधिकाधिक उपाय किए जा सकते हैं-

1. बृहद यज्ञों का आयोजन (यदि सम्भव हो तो पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर) करें जिसमें आर्य सदस्यों आदि के अतिरिक्त, जन सामान्य को भी प्रेमपूर्वक आमन्त्रित किया जाए। सम्भव हो तो यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

2. यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन-सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य (श्रेष्ठ) विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

3. अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार-विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन अथवा कार्यशालाएं आयोजित करें। *'सुखी परिवार कैसे रहें?'* विषय पर यदि गोष्ठियां आयोजित की जाएं तो अवश्य ही एक लोकप्रिय कार्यक्रम साबित होगा।

4. वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की

70वां स्वाधीनता दिवस समारोह

विशेष कथाओं का भी आयोजन करें जिससे इन ग्रन्थों के विचारों का लाभ लोगों के धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनीतिक उत्थान के लिए मिल सकें।

5. क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। **इस हेतु सभा से 'एक निमन्त्रण', आर्यसमाज के स्वर्णिम सूत्र' एवं 'लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश' उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।**

6. आर्यसमाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके 'आत्मावलोकन' अवश्य करें कि क्या हमारे आर्यसमाज की गतिविधियां सन्तोषजनक हैं? क्या उससे और अधिक कुछ सुधार किया जा सकता है? यदि नहीं, तो उसके कारण और समाधानों पर चर्चा करें।

7. उपरोक्त के अतिरिक्त कोई अन्य प्रकार का आयोजन आपके मस्तिष्क में उठे तो उसे हमें भी लिखकर भेजें जिससे

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

अन्य आर्य समाजों के सदस्यों को भी उससे अवगत कराया जा सके।

8. आपसे अनुरोध है कि आप अपनी सुविधानुसार अभी से अपने वेद प्रचार समारोह की तिथियां निश्चित करलें और संगीतकारों, भजनोपदेशकों तथा वैदिक साहित्य का अधिकाधिक वितरण करें।

9. आर्यसमाज के अधिकारियों से यह भी प्रार्थना की जाती है कि आगामी **7 अगस्त** को **हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस विजय दिवस** के रूप में धूमधाम से मनाएं। श्रावणी उपाकर्म, एवं सामूहिक यज्ञोपवीत परिवर्तन का विशेष रूप से आयोजन करें।

अपने आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशनार्थ **'आर्य सन्देश'** में अवश्य भेजें।

– धर्मपाल आर्य, प्रधान

आस्था टीवी चैनल पर अवश्य देखें :
"आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर"
रविवार 6 अगस्त, 2017
दोपहर 1-3 बजे

संगठन की सुदृढ़ता एवं विस्तार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण विषयों पर दिल्ली सभा के अन्तर्गत दिल्ली स्थित आर्यसमाजों की गोष्ठियों का दौर जारी

उ.पश्चिम दिल्ली गोष्ठी
आर्यसमाज प्रशान्त विहार, दिल्ली-110085
रविवार : 20 अगस्त, 2017
व्यवस्थापक :- श्री सुरेन्द्र आर्य जी

गोष्ठी समय एवं कार्यक्रम :

चाय/जलपान दोपहर 2:30 बजे	**प्रथम सत्र** सायं 3 से 5 बजे
चाय/नाश्ता : सायं 5 बजे	**द्वितीय सत्र :** सायं 5:15 से 7:15 बजे

वेद-स्वाध्याय

अमरता का केन्द्र

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।। -ऋ. 8/101/15
ऋषिः जमदग्निर्भार्गवः।। देवता - गौः।। छन्दः त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-मैं **चिकितुषे जनाय** = प्रत्येक चेतनावाले मनुष्य को **नु प्रवोचम्** = कहे देता हूं कि **अनागाम्** = निरपराध **अदितिम्** = अहन्तव्या **गाम्** = गौ को मा **वधिष्ट** = कभी मत मार, क्योंकि यह **रुद्राणां माता** =रुद्रदेवों की माता है, **वसूनां दुहिता** = वसु देवों की कन्या है और **आदित्यानां स्वसा** = आदित्यदेवों की बहिन है तथा **अमृतस्य नाभिः** = अमरपन का केन्द्र है।

विनय- हे मनुष्य! तू गौ को कभी मत मार। इस निरपराध बेचारी गौ को कभी मत मार। तू चेतनावाला है, तुझे परमात्मा ने कुछ समझ, अक्ल, बुद्धि दी है। इसलिए तुझे कहता हूं-तू गो-घात कभी मत करना! तू अपनी समझ का तनिक-सा उपयोग करेगा तो तुझे पता लग जाएगा कि यह गौ यद्यपि बड़ी भोली, बेचारी, बिलकुल निर्दोष है, इसलिए इसे कोई भी कभी मार सकता है, मारने से यह मर जाएगी, कोई प्रतिरोध न करेगी, परन्तु साथ ही यह इतनी महत्त्वशालिनी है, सब देवों की सम्बन्धिनी और अमरपन का एक केन्द्र है कि इसका मारना अपना नाश करना है, इसका घात करना आत्मघात है। यह गौ कहीं और नहीं, हमारे ही अन्दर है। यह 'अदिति' आत्म-शक्ति है, वाणी है, अन्तरात्मा की वाणी है, अन्दर की आवाज है। तुम इसे दबाओगे तो यह चुपचाप दब तो जाएगी, परन्तु इससे तुम्हारा आत्मा नष्ट हो जाएगा। यह 'अदिति' वाणी (यह आदित्यों की बहिन) वसुओं-आत्मा की वासक अग्नियों-से प्रकट होती है (इनकी पुत्री है) और मनुष्य के सब रुद्रों-प्राणों-की और सब चेष्टाओं की माता है। यह ऐसी अमृत वस्तु है कि इसे मारने का यत्न करने वाला स्वयं मर जाता है और इसकी रक्षा करने वाला सुरक्षित रहता है। इसी अन्दर की 'गौ' की प्रतिनिधि आधिदैविक में भूमि है, आधिभौतिक में राष्ट्रदेवी है और पशुओं में गौ माता है। हे चेतनावाले मनुष्य! तू समझ कि इन गौओं का भी घात कितना भयंकर परिणाम लानेवाला है। भूमि, राष्ट्र और गौओं की रक्षा करने में ही मनुष्यों की, मुनष्य-जाति की रक्षा है। देखना, इस भूमि-गौ की, इस राष्ट्र-गौ की तथा इस गौ-पशु की तनिक भी हिंसा करने वाला कर्म तुझसे न हो। जब कभी इन सर्वथा अप्रतिरोधिनी गौओं की हिंसा करने का प्रलोभन आये तो याद कर लेना कि ये सब अमृत की नाभियां हैं और अपने-अपने क्षेत्र के आदित्यों, वसुओं और रुद्रों से सम्बन्धित दिव्य शक्तियां हैं। इनको मारकर तू कभी फूल-फल नहीं सकता, परन्तु अन्त में सब बाह्य गौओं की गौ तो अन्तरात्मा की वाणी है। इस गौ को तो कभी मत छेड़ना, उस सदा पालना, पोसना और इसकी आज्ञा को सदा मानना। अपना सर्वस्व स्वाहा करके भी इस गौ की रक्षा करना। इसे तनिक भी नहीं दबाना। यदि इस अमृतनाभि 'अदिति' गौ का रक्षण, पोषण और वृद्धि होती गई तो तू भी एक दिन अमृत हो जाएगा, देवों का राज्य पा जाएगा। देखना, इस सर्वथा अप्रतिरोधिनी परम शान्त गौ का तेरे यहां तनिक भी तिरस्कार न होने पाये, इसे तनिक भी क्षति न पहुंचने पाये।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

हम जाएंगे तो वहां मजबूत होगा आर्यसमाज

.... जिस समय आर्य समाज के आन्दोलन से प्रभावित होकर देश विदेश में धार्मिक परिस्थिति बदलती जा रही थी। सबको साथ लेकर वेद का आदेश और महर्षि दयानन्द के सपने कृणवन्तो विश्वमार्यम को लेकर उत्साहित आर्य वीर आगे बढ़ रहे थे ठीक उसी समय विश्व के राजनैतिक माहौल ने समूचे विश्व की मानवता को विश्व युद्ध की ओर धकेल दिया। मानवता के साथ-साथ ये आर्य समाज के कार्यों को भी एक धक्के जैसा था। बर्मा में बौद्ध सैनिक शासन ने आर्य समाज की अनेक जमीनों पर कब्जा कर लिया। ......

......इसी कारण कुछ जगहों पर वहां आर्य समाज की वैदिक विचाधारा कमजोर हुई यही कारण है कि वहां आर्य महासम्मलेन होना समय की मांग के साथ स्वामी जी के सपने का भार खुद के कन्धों पर उठाने का बीड़ा हम सभी आर्यों ने उठाया। लेकिन हम फिर कहते हैं यह कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं है आप सभी लोगों द्वारा जो साहस और प्रेरणा पूर्व के महासम्मेलनों में मिलती रही उसी की आकांक्षा में बर्मा की भूमि आपकी राह देख रही है, इसी विश्वास के साथ कि आप आयेंगे तो वहां मजबूत होगा आर्य समाज।.....

जब किसी अँधेरे मकान में रहने वाले लोग उस अँधेरे को सत्य माने बैठे हों और पीढ़ी दर पीढ़ी बीतने के बाद उस अँधेरे के प्रति आस्था बनाकर उसे अपना भाग्य समझ लेते हों, उसकी पूजा करने लगते हों पर तब अचानक एक दिन कोई एक महानुभाव दीपक लेकर उस अँधेरे मकान के अन्दर जाये तो एक पल को उसके प्रकाश से भगदड़ मचना लाजिमी है। लेकिन यदि उस मकान के अन्दर रहने वाले एक भी शक्स ने प्रकाश का नाम सुना होगा तो वह वहां जरूर डटा रहेगा और अन्य को भी उस प्रकाश के प्रति जागरूक ही नहीं करेगा बल्कि बतायेगा यही पूर्ण सत्य है और वह अँधेरा हमारा भाग्य नहीं था।

कुछ इसी तरह आप सभी को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आज से लगभग 140 साल पहले मानव और उसके धार्मिक मूल्यों की रक्षा हेतु महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज महज अपनी 20 वर्ष की आयु में केरीबियाई द्वीपों से लेकर भारत समेत अनेक देशों में अपनी पकड़ बना चुका था। बिना मीडिया और बिना सोशल मीडिया के। न टेलीवजन थे और न लोगों के हाथों में आज की तरह इंटरनेट और मोबाइल। पर फिर भी अज्ञानता को मिटाने की यह धार्मिक क्रांति अपने सर्वोच्च शिखर को छू रही थी। अँधेरे को मिटाने के लिए प्रकाश का यह दीपक देश और विदेश में अज्ञानता और पाखंड के अँधेरे को मिटा रहा था।

गौर करने वाली बात यह है कि यह कार्य कोई एक अकेला व्यक्ति नहीं कर रहा था। अपितु बच्चा-बच्चा दयानन्द का सिपाही बन इस कार्य को आगे बढ़ाने में लगा था। दानी महानुभाव दान द्वारा तो अनेक लोग इसमें तन-मन-धन से साथ दे रहे थे। जिस कारण यह ज्वाला भारत के अलावा नेपाल मॉरीशस सहित अनेक देशों के अलावा बर्मा में पहुँच गयी थी। वहां अचानक बड़ा परिवर्तन हुआ। स्थानीय स्तर पर धड़ाधड़ आर्य समाजें बनने लगीं। मचीना, रंगून, माण्डले, लाशियो, मोगोग, जियावाड़ी, मानैवा, काम्बलू, नामटू आदि शहरों में भवन तैयार होने लगे। कई सत्संग मंडलियां मिलकर दिन रात वेद प्रचार का कार्य करने लगीं। शहर के जियावाडी बाजार में आर्य गुरुकुल स्थापित कर बर्मा के आर्य वीरों ने बर्मा को पुनः ब्रह्मदेश बनाने का संकल्प धारण कर लिया।

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि जिस समय आर्य समाज के आन्दोलन से प्रभावित होकर देश विदेश में धार्मिक परिस्थिति बदलती जा रही थी। सबको साथ लेकर वेद का आदेश और महर्षि दयानन्द के सपने कृणवन्तो विश्वमार्यम् को लेकर उत्साहित आर्य वीर आगे बढ़ रहे थे ठीक उसी समय विश्व के राजनैतिक माहौल ने समूचे विश्व की मानवता को विश्व युद्ध की ओर धकेल दिया। मानवता के साथ-साथ ये आर्य समाज के कार्यों को भी एक धक्के जैसा था। बर्मा में बौद्ध सैनिक शासन ने आर्य समाज की अनेक जमीनों पर कब्जा कर लिया। आर्ष साहित्य मिटाने का कार्य हुआ। एक बार पुनः बताना चाहेंगे कि इसके बाद भी आर्यजनों के साहस ने घुटने नहीं टेके बल्कि नवीन साहित्य की कमी के बावजूद भी फटे पुराने वैदिक साहित्य को जोड़-तोड़कर उसे लेकर ही आगे बढ़ते गये।

कहते हैं प्रकाश अँधेरे से कभी नहीं हारता। बस कई बार कुछ पल को ग्रहण लग जाता है। इस सबके बाद आज भी वहां बर्मा (म्यांमार) में पुरोहित, प्रचारक हिन्दी के साक्षरता स्तर पर कविता प्रशिक्षण सत्र, सर्व शिक्षा अभियान जो गर्मियों की छुट्टियों में गांवों में आयोजित क्लासों के माध्यम से चलते रहे है। इसके अलावा विभिन्न सत्रों में चरित्र निर्माण शिविर अनुशासन आदि पर विशेष बल दिया जाता रहा है। हवन आदि से लेकर वैदिक विचाधारा के कार्यों को वहां के आर्ष विद्वानों द्वारा गाँव-गाँव में सत्र चलते रहते हैं। वैदिक धर्म की परीक्षा भी वहां सालाना मई माह में कराई जाती है। कुल मिलाकर वहां आर्य समाज बड़े विशाल भवनों से लेकर टूटे-फूटे भवनों तक में चल रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर बर्मा के शहरों और गाँवों के इन आर्य समाजों में चल रही यह गतिविधियां भले ही मन को सुकून और राहत देती हों किन्तु इस सबके पीछे एक हल्का सा दर्द भी है जिसे किसी एक व्यक्ति से साझा न कर सामूहिक रूप से आप सभी के समक्ष रखना चाहेंगे। दरअसल पूर्व के आर्य विद्वानों, महानुभावों ने आर्य समाज के लिए जो किया वह ऋण हम कभी नहीं उतार पाएंगे किन्तु आज वर्तमान आर्य समाज की जिम्मेदारी का भार हम सबके ऊपर है। पिछले दिनों हमने वहां के आर्य समाज से जुड़े लोग दिल्ली बुलाये यहाँ उन्हें महीनों शुद्ध रूप से वैदिक हवन संध्या से परिचित कराया। उनके खाने ठहरने के अलावा आर्ष विद्वानों द्वारा लिखित नवीन साहित्य भी दिया।

चूँकि पिछले 120 वर्षों में वहां आर्य समाज का नवीन साहित्य नहीं पहुंचा था और न अधिक संख्या में आर्य महानुभाव वहां गये। इस कारण कुछ जगहों पर वहां आर्य समाज की वैदिक विचारधारा कमजोर हुई इसी कारण वहां आर्य महासम्मलेन होना समय की मांग के साथ स्वामी के सपने का भार खुद के कन्धों पर उठाने का बीड़ा हम सभी आर्यो ने उठाया। लेकिन हम फिर कहते हैं यह कार्य किसी एक व्यक्ति का नहीं है। आप सभी लोगों द्वारा जो साहस और प्रेरणा पूर्व के महासम्मेलनों शिकागो, हॉलैंड, मॉरीशस, सूरीनाम, बैंकाक से लेकर दक्षिण अफ्रीका सिंगापुर, आस्ट्रेलिया और नेपाल में मिलती रही उसी की आकांक्षा में बर्मा की भूमि आपकी राह देख रही है कुछ इस विश्वास के साथ कि आप आयेंगे तो वहां मजबूत होगा आर्य समाज।

- सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा म्यांमार के संयुक्त तत्त्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन माण्डले (म्यांमार): 6-7-8 अक्तूबर, 2017

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक भारतीय आर्यजनों के लिए यात्रा विवरण

सम्माननीय आर्य बन्धुओ!

सादर नमस्ते। आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 06, 07 तथा 08 अक्टूबर 2017 को म्यांमार (बर्मा) के माण्डले शहर में सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि भी बर्मा पहुंचेंगे। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु काफी आर्यजनों के पहुंचने की सम्भावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेंगे। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही आर्य प्रतिनिधि सभा, बर्मा द्वारा प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था की जायेगी।

माण्डले में ब्रिटिश शासनकाल में यहां किलानुमा जेल थी जहां भारत माता के अनेक वीर सपूतों को बंदी बनाकर रखा गया था। किले के अवशेष आज भी भारतीय क्रांति की स्मृति ताजा कर देते हैं। प्रसिद्ध आर्य समाजी लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचन्द्र बोस समेत कई क्रान्तिकारी यहां एकांतवास में रखे गये थे। अकेले और असुविधाओं के बीच, सिर्फ इसलिए कि आर्य समाज भारत देश से गुलामी की बेड़ियां काटकर फेंक देने पर अडिग था जिसे अंग्रेजी हुकूमत नहीं चाहती थी।

माण्डले का मौसम लगभग भारत जैसा ही है। सर्दियों में कड़ी, सर्दी, गर्मियों में आकाश से लेकर धरती तक भट्ठी की तरह तपाती गरमी तो बरसात में भारी वर्षा भी यहां होती है। मंदिरों, प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य से भरपूर यह शहर अपनी अनेक विशेषताओं के कारण भी जाना जाता है। यहां दुनिया की सबसे बड़ी पुस्तक के रूप में एक मंदिर विद्यमान है यानी कि किताब के हर पृष्ठ के रूप में एक मंदिर बना है जिनकी संख्या करीब 500 से ज्यादा है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि ब्रह्मदेश यानी बर्मा में 120 वर्ष के लम्बे अंतराल के पश्चात् यह आर्य महासम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। अनेकों आर्यजन इस अवसर पर बर्मा के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए बर्मा के कुछ रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है।

यात्रा की जानकारी निम्न प्रकार है–

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 के बारे में महत्वपूर्ण सूचना

एअरलाइन्स में सीटें न मिलने के कारण यात्रा नं.1 तथा यात्रा नं.2 दोनों में दिल्ली तथा कोलकता से प्रस्थान करने की तथा वापस आने की तारीखों में परिवर्तन करना पड़ा है। यात्रीगण कृपया अच्छी तरह नोट कर लें कि......

1. **यात्रा नं. 1 के सभी यात्रियों को दिल्ली से 3 अक्टूबर 2017 की रात्रि को 11:00 बजे रंगून के लिये प्रस्थान करना है और 10 अक्टूबर की रात्रि को 10:00 बजे वापस आना है।**
2. **यात्रा नं. 1 के कोलकता से जाने वाले सभी यात्री 4 अक्टूबर 2017 को कोलकता से सुबह 8:15 पर ढाका होते हुए रंगून जायेंगे और 11 अक्टूबर की रात को 8:00 बजे कोलकता वापस पहुँचेंगे।**
3. **मलेशिया टूर पर जाने वाले यात्रा नं. 2 के यात्री भी 3 अक्टूबर की रात्रि को दिल्ली से 11 बजे प्रस्थान करेंगे तथा 12 अक्टूबर की रात्रि को 10 बजे दिल्ली वापस पहुँचेंगे।**

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं.1

3 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 2017

दिल्ली से (7 रात्रि 8 दिन) **कोलकता से (8 रात्रि 9 दिन)**

कार्यक्रम

03.10.2017	दिल्ली से जाने वाले यात्री रात्रि को 11 बजे हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान करेंगे और 4 अक्टूबर की सुबह 7 बजे क्वालालम्पुर पहुँचेंगे।
04.10.2017	दिल्ली वाले यात्री क्वालालम्पुर से 9:15 AM की फ्लाइट से रंगून जायेंगे और रंगून से दोपहर 1:30 PM की फ्लाइट से 2:50 PM पर इनले लेक पहुँचेंगे। रात्रि विश्राम इनले लेक होटल में करेंगे। कोलकता से जाने वाले यात्री 4 अक्टूबर को सुबह 8:15 पर कोलकता से प्रस्थान करके 9:45 AM पर ढाका पहुँचेंगे और ढाका से 12:45 PM की उड़ान से 3:30 PM पर रंगून पहुँचेंगे। रंगून से लगभग 5:30 PM की उड़ान से लगभग 7:00PM पर इनले लेक पहुँचेंगे।
05.10.2017	इस दिन दिल्ली से तथा कोलकता से आने वाले सभी यात्री सुबह 6 बजे से इनले लेक के सभी स्थलों का भ्रमण करेंगे। दोपहर बाद लक्जरी कोचों से माण्डले के लिये प्रस्थान करेंगे। रात्रि विश्राम मांडले में।
	(पानी के अन्दर बसे हुए शहर को देखने के लिये इनले लेक पूरे विश्व में विख्यात है)
06.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
07.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
08.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) दोपहर 1 बजे तक भोजन के पश्चात् अपरान्ह 3 बजे से मांडले तथा आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके रात्रि विश्राम मांडले में
09.10.2017	सुबह 5 बजे लक्जरी कोचों द्वारा रंगून के लिये प्रस्थान। दोपहर से रात्रि तक रंगून भ्रमण तथा रात्रि विश्राम रंगून में
10.10.2017	दिल्ली के यात्री रंगून से सुबह 11.20 की उड़ान से क्वालालम्पुर होते हुए रात्रि 10 बजे दिल्ली पहुँचेंगे।
11.10.2017	कोलकता वाले यात्री रंगून से शाम 4:15 बजे ढाका होते हुए रात को 8 बजे कोलकता पहुँचेंगे।

यात्रा व्यय

दिल्ली से जाने वाले यात्रियों केलिये	₹ 78500/- प्रति व्यक्ति
कोलकता से जाने वाले यात्रियों के लिये	₹ 65500/- प्रति व्यक्ति

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 6/7 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा वीजा आदि शामिल हैं।

उक्त यात्रा हेतु दिल्ली से केवल 75 सीटों का आरक्षण करवाया गया है तथा कोलकता से केवल 25 सीटों का आरक्षण करवाया गया है। कृपया ध्यान रखें कि इन सीटों की पूर्ति होने के पश्चात् उक्त यात्रा-दर में वृद्धि हो सकती है इसलिये शीघ्र से शीघ्र अपनी सीट बुक करालें।

नोट: (1) यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में THOMAS COOK(I)Ltd. के नाम बैंक ड्राफ्ट (Payable at Ahmedabad) द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:
श्री प्रकाशजी आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(2) बैंक ड्राफ्ट के अतिरिक्त आपको निम्नलिखित सामान भी साथ में दिल्ली भेजना है :
(A) स्वयं का पासपोर्ट जिसकी वैधता (Validity)05.04.2018 तक हो (B)Visa Application Form की 3 प्रति (तीनों पर अलग-अलग हस्ताक्षर करके) (C) चार कलर फोटोग्राफ 35X45mm साइज के (वाइट बैक ग्राउन्ड के साथ) (D) दो कोरे लैटर हैड (स्टाम्प व हस्ताक्षर सहित) (E) यदि आप स्वयं रोजगार करते हैं तो कम्पनी के रजिस्ट्रेशन की जैरोक्स कापी तथा पार्टनरशीप डीड की जैरोक्स कापी भेजनी है, यदि आपकी कम्पनी प्रा. लि. है तो Memorandum of Article की जैरोक्स कापी भेजनी है।

म्यांमार (बर्मा) यात्रा नं.2

(केवल दिल्ली से जाने वाले यात्रियों के लिये)

03 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2017

(9 रात्रि 10 दिन)

कार्यक्रम

03.10.2017	दिल्ली से रात्रि को 11:00 बजे हवाई जहाज द्वारा प्रस्थान और 4 अक्टूबर की सुबह 7:00 बजे क्वालालम्पुर आगमन।
04.10.2017	क्वालालम्पुर से 9:15 AM की फ्लाइट से रंगून और रंगून से दोपहर 1:30 PM की फ्लाइट से 2:50 PM पर इनले लेक पहुँचेंगे। रात्रि विश्राम इनले लेक होटल में करेंगे।
05.10.2017	सभी यात्री सुबह 6 बजे से इनले लेक के सभी स्थलों का भ्रमण करेंगे। दोपहर बाद लक्जरी कोचों से माण्डले के लिये प्रस्थान करेंगे। रात्रि विश्राम मांडले में।
	(पानी के अन्दर बसे हुए शहर को देखने के लिये इनले लेक पूरे विश्व में विख्यात है)
06.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
07.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) सुबह से शाम तक
08.10.2017	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (अम्बिका मंदिर परिसर, मांडले) दोपहर 1:00 बजे तक भोजन के पश्चात् अपरान्ह 3 बजे से मांडले तथा आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करके रात्रि विश्राम मांडले में
09.10.2017	सुबह 5 बजे लक्जरी कोचों द्वारा रंगून के लिये प्रस्थान। दोपहर से रात्रि तक रंगून भ्रमण तथा रात्रि विश्राम रंगून में
10.10.2017	रंगून से सुबह 11.20 की उड़ान से अपरान्ह 15:40 पर क्वालालम्पुर पहुँचेंगे। शाम को **Twin Tower** देखेंगे तथा रात्रि विश्राम क्वालालम्पुर में।
11.10.2017	पूरे दिन क्वालालम्पुर के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, रात्रि विश्राम क्वालालम्पुर में
12.10.2017	सिटी टूर एवं शापिंग तथा शाम को 18:50 पर दिल्ली के लिये प्रस्थान। दिल्ली आगमन रात्रि 10 बजे।

यात्रा व्यय

₹ 99500/- प्रति व्यक्ति

इस राशि में सभी हवाई यात्राओं का किराया, 8 रात्रि का 4 स्टार होटलों का भाड़ा, लक्जरी कोच का भाड़ा, क्वालालम्पुर, रंगून, इनले लेक तथा मांडले का भ्रमण व्यय, भोजन व्यय, बीमा तथा दोनों देशों के वीजा आदि शामिल हैं।

(1) उक्त यात्रा दर केवल प्रथम 25 यात्रियों के लिये है। उसके पश्चात् यात्रा दर में वृद्धि हो सकती है। इसलिये शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक करालें। यात्रा व्यय की सम्पूर्ण राशि एक ही बार में **THOMAS COOK(I)Ltd.** के नाम बैंक ड्राफ्ट (Payable at Ahmedabad) द्वारा निम्न पते पर तत्काल भेजनी होगी:
श्री प्रकाशजी आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

(2) बैंक ड्राफ्ट के अतिरिक्त आपको निम्नलिखित सामान भी साथ में दिल्ली भेजना है :
(A)स्वयं का पासपोर्ट जिसकी वैधता (Validity) 05.04.2018 तक हो (B) 35X50mm साइज के चार कलर फोटोग्राफ (वाइट बैक ग्राउन्ड के साथ) (C) मलेशिया के लिये **Visa Application Form** की आवश्यकता नहीं है।

कुछ आवश्यक सूचनाएँ

(1) **आर्य-सन्देश में प्रकाशित यात्रा विवरण के आधार पर जो यात्री ₹15000/- की राशि भेज चुके हैं वे शेष राशि Thomas Cook (I)Ltd. के नाम ड्राफ्ट बनवाकर दिल्ली के पते पर भेजने का कष्ट करें।**

(2) यात्रा नं. 1 के लिये दिल्ली से केवल 75 सीटें बुक कराई गई हैं और कोलकता से केवल 25 सीटें ही बुक करवाई गई हैं। इन सीटों के आरक्षित हो जाने के बाद, इस यात्रा में शामिल होने वाले यात्रियों को अधिक यात्रा-व्यय देना पड़ सकता है। अत: शीघ्रातिशीघ्र अपनी सीट बुक कराने का प्रयास करें।

(3) यात्रा-व्यय में 70 वर्ष तक की आयु के यात्रियों का बीमा शुल्क शामिल है। 70 वर्ष से अधिक उम्र वाले यात्रियों को अतिरिक्त बीमा-राशि देनी होगी। ऐसे यात्री स्वयं भी अपना बीमा करा सकते हैं।

(4) सभी यात्रियों को यात्रा की व्यय-राशि के ड्राफ्ट के साथ अपना पासपोर्ट, चार कलर फोटो बर्मा के लिये तथा चार कलर फोटो मलेशिया के वीजा हेतु, वीजा फार्म तथा दो कोरे लैटरहैड भी भेजने हैं जिनका विवरण पृष्ठ 2 पर दिया गया है।

(5) संलग्न आवेदन पत्र पर सम्बन्धित आर्यसमाज के पदाधिकारियों की अनुमति/स्वीकृति आवश्यक है।

(6) सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 4 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है जिसके संयोजक श्री प्रकाश आर्य, मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य (1) श्री एस. पी. सिंह, दिल्ली (2) श्री अरुणजी वर्मा, दिल्ली तथा (3) श्री शिवकुमारजी मदान दिल्ली हैं। श्री एस.पी. सिंह इस यात्रा के मुख्य सम्पर्क सूत्र रहेंगे। इन सभी के मोबाइल नम्बर नीचे दिये गये हैं।

(7) सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को यात्रा के कार्यक्रम में परिस्थिति अनुसार फेरफार करने का पूर्ण अधिकार होगा।

(8) **याद रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 05/04/2018 तक होनी आवश्यक है।**

(9) इमीग्रेशन में दिखाने हेतु अपना क्रेडिट कार्ड या डेबिट कार्ड साथ में अवश्य रख लें

(10) अपने साथ न्यूनतम 500 US डालर प्रति यात्री अवश्य ले चलें।

यात्रा कैन्सिल कराये जाने पर कैन्सीलेशन चार्जेज निम्न प्रकार लागू होंगे:

20 अगस्त 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल कराने पर 50% कटौती की जायेगी। (2) 5 सितम्बर 2017 के बाद यात्रा कैन्सिल करने पर 100% कटौती की जायेगी। (3) यात्रा प्रस्थान की तारीख से 25 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर ₹12000/- की कटौती होगी, 15 दिन पूर्व वीजा न मिलने पर 50% कटौती होगी तथा 1 सप्ताह पूर्व वीजा न मिलने पर 75% कटौती होगी।

कृपया उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु आप मुझसे तथा निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं :

1. **श्री एस.पी.सिंह मो. 9540040324 (यात्रीगण सर्वप्रथम इनसे ही सम्पर्क करें)**
2. **श्री अरुण वर्मा मो. 98100 86759 (श्री एस.पी.सिंह से सम्पर्क न होने पर ही इनसे सम्पर्क करें)**
3. **श्री शिवकुमार मदान मो. 9310474979 (श्री एस.पी.सिंह से सम्पर्क न होने पर ही इनसे सम्पर्क करें)**

आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि 31 अगस्त 2017

हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

शेष विवरण एवं आवेदन प्रपत्र पृष्ठ 7 पर

(प्रकाश आर्य)
मन्त्री, सार्वदेशिक सभा, मो. 09826655117

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में घर-घर यज्ञ - हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत

यज्ञ विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताओं तथा यज्ञ विज्ञान का सामान्य ज्ञान प्रदान करने हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत रोहिणी सै.-7 में का शिविरि सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में संचालित घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों में श्रृंखलाबद्ध आयोजित पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर आर्य समाज सैक्टर-7 रोहिणी में दिनांक 18 से 23 जुलाई 2017 के मध्य आयोजित किया गया। शिविर में लगभग 45-50 व्यक्तियों ने यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया इसमें अनेक गैर आर्यसमाजी बन्धुओं ने भी यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। वेद प्रचार मण्डल उत्तर पश्चिमी दिल्ली के श्री सुरेन्द्र आर्य ने कहा कि ''इन शिविरों की सफलता व आर्य बन्धुओं की यज्ञ विज्ञान की जिज्ञासा को देखते हुए यह शिविर हर आर्य समाज में आयोजित करने की व्यवस्था हेतु सभी अधिकारियों को प्रयास करना चाहिए। जैसाकि आप सबको विदित है कि यज्ञ के इन प्रशिक्षणों में जो शोध हुए हैं उनका विस्तार पूर्वक वर्णन आर्य बन्धुओं को दिया जा रहा है ताकि जो यज्ञ पाप और पुण्य के नाम से किए जा रहे हैं उस भ्रांति को दूर करते हुए यज्ञ से वर्तमान वायु मण्डल में जो शुद्धता आएगी वह सारे मानव जाति के लिए लाभ दायक है। इसमें कोई पाप नहीं है यदि विधिवत् तरीके से यज्ञ किया जाए जैसे जब अग्नि पूर्ण रूप से प्रज्वलित हो जाए तभी उसमें उचित मात्रा में सामग्री आदि डालनी चाहिए तब तो पुण्य ही पुण्य है लेकिन यदि अग्नि मंद होगी और सामग्री की मात्रा ज्यादा होगी या सामग्री शुद्ध नहीं होगी तो पाप ही पाप है। अपनी वाणी को विराम देते हुए श्री सुरेन्द्र आर्य ने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ योजना संचालित करके मानव जाति के लिए बहुत बड़ा पुण्य का कार्य किया है जिससे प्राणि मात्र तो लाभान्वित होंगे ही साथ ही भारत में पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में बहुत बड़ा योगदान मिलेगा। यज्ञ से होने वाले लाभों की जानकारी सिर्फ आर्य समाजियों तक ही सीमित न रखते हुए समस्त मानव जाति में इसका प्रचार-प्रसार करना होगा तभी हम 'स्वच्छ भारत' का सपना साकार कर सकेंगे।

शिविर को सफल बनाने में आर्य समाज सैक्टर-7 रोहिणी के संरक्षक श्री सुरेन्द्र आर्य, मंत्री श्री संजीव गर्ग, श्री सुरेन्द्र चौधरी ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर में वैज्ञानिक जानकारी सविस्तार समझाने में सभा महामंत्री श्री विनय आर्य का विशेष योगदान रहा।

- सतीश चड्ढा, संयोजक

आगामी यज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रम आर्यसमाज सागरपुर में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा आर्यसमाज सागरपुर के सहयोग से आगामी पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर दिनांक 10 से 13 अगस्त, 2017 तक आर्यसमाज सागरपुर के हॉल में प्रातः 6 से 7.30 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। पंजीकरण एवं जानकारी के लिए श्री सुखबीर सिंह आर्य जी (मो. 9350502175, 9540012175) से सम्पर्क करें। - *संयोजक*

★ अपनी आर्यसमाज में पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर लगवाने हेतु श्री सतीश चड्ढा जी, संयोजक (9540041414) से सम्पर्क करें।
★ एक साथ 100 लोगों के प्रशिक्षण की व्यवस्था। ★ न्यूनतम डेढ़ घंटे के चार सत्र अथवा दो घंटे दो के सत्र का कार्यक्रम। - महामन्त्री

संस्मरण

''जब भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी ने रखी आर्य समाज के सिद्धान्त की लाज रखी''

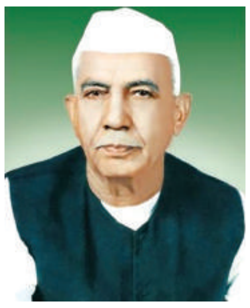

बात उस समय की है जब भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति स्वनामधन्य स्वर्गीय घनश्याम दास जी बिड़ला की शोक सभा का आयोजन दिल्ली नागरिक परिषद की ओर से फिक्की हॉल, नई दिल्ली में परिषद के प्रधान श्री कंवरलाल गुप्ता (सांसद) की अध्यक्षता में किया गया था तथा जिसका संचालन श्री ताराचन्द खण्डेलवाल (सांसद) कर रहे थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तत्कालीन गृहमंत्री चौ. चरण सिंह जी तथा वरिष्ठ अतिथि श्री एच.एन. बहुगुणा केन्द्रीय मंत्री थे। सभी मुख्य अतिथियों से जो मंच पर बैठे हुए थे श्री घनश्याम दास विरला जी की मूर्ति पर माला अर्पण करने के लिए कहा गया। चौ. साहब को छोड़कर सभी ने माला अर्पण की। पीछे से आवाज आई कि यह जाट कितना घमण्डी है कि माला अर्पण नहीं की। यह आवाज सुनकर मैं खड़ा हो गया और उत्तर दिया कि चौ. साहब निष्ठावान आर्य समाजी हैं, इसलिए मूर्ति पर माला नहीं चढ़ाई।

कार्यक्रम समाप्त होने पर जब चौ. साहब मंच से उतरे तब मैंने एक कागज पर लिखा ''चौ. साहब आपने आर्य समाज के सिद्धान्त का सम्मान बढ़ाया है इसलिए मैं दिल्ली आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूं। कागज हाथ में देकर मैं एक तरफ खड़ा हो गया। चौ. साहब ने पढ़ा और पूछा कि यह मामचन्द रिवाड़िया कौन है? पास में ही श्री बलराज मधोक जी खड़े थे। उन्होंने कहा कि रिवाड़िया जी ये हैं। तब चौ. सहब ने कहा कि 'इतनी बड़ी सभा में एक व्यक्ति तो है जिसने मेरे कार्य की प्रशंसा की।'

-मामचन्द रिवाड़िया, पूर्व मंत्री,
आर्य केन्द्रीय सभा नई दिल्ली

यह संस्मरण प्रसिद्ध उद्योगपति स्व. घनश्यामदास जी बिड़ला की श्रद्धान्जलि सभा के अवसर का है।

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश
18 भाषाओं में)
अब सीडी में उपलब्ध

मूल्य मात्र 30/- रुपये
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
फोन. 23360150, 9540040339

जिन्ना चले गए : सोच यहीं रह गयी

....देश का बँटवारा हुआ। पाकिस्तान बन गया। जिन्ना चले गए। लेकिन वह सोच यहीं रह गयी। अगर चरखा, सत्याग्रह और अहिंसा आजादी की लड़ाई के हथियार थे तो वन्दे मातरम् भी उनमें से एक था। फिर वन्दे मातरम् के लिए आज तक अदालती लड़ाइयाँ क्यों चल रही हैं? सवाल ये भी है कि मुहम्मद अली जिन्ना के नींद से जागने के बाद सिखाया गया कि इस्लाम में वन्देमातरम् हराम है? क्योंकि 1905 में बंगाल विभाजन रोकने के लिए जो बंग-भंग आंदोलन चला उसमें किसी ने हिन्दू मुसलमान के आधार पर वन्दे मातरम् का बहिष्कार नहीं किया। हिन्दू और मुसलमान एक साथ एक सुर में वन्देमातरम् का जय घोष कर बलिदान की वेदी पर चढ़ गये थे।.....

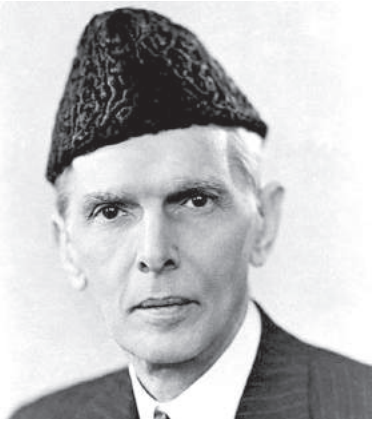

मद्रास हाई कोर्ट ने फैसला सुनाया है कि राष्ट्रगीत ''वन्दे मातरम्'' सभी स्कूलों, कॉलेजों और शिक्षण संस्थानों में हफ्ते में एक दिन गाना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही सभी सरकारी और निजी कार्यालयों में महीने में एक दिन ''वन्दे मातरम'' गाना ही होगा। जस्टिस एम.वी. मुरलीधरन ने यह भी आदेश दिया है कि वन्दे मातरम् को तमिल और अंग्रेजी में अनुवाद करना चाहिए और उन लोगों के बीच भी बांटना चाहिए जिन्हें संस्कृत या बंगाली में गाने में समस्या होती है। अदालत ने अपने आदेश में कहा है कि शैक्षणिक संस्थान हफ्ते में सोमवार या शुक्रवार को वंदे मातरम गाने के लिए चुन सकते हैं।

अदालत ने यह भी कहा, ''इस देश'' में सभी नागरिकों के लिए देशभक्ति जरूरी है। यह देश हमारी मातृभूमि है और देश के हर नागरिक को इसे याद रखना चाहिए। आजादी की दशकों लम्बी लड़ाई में कई लोगों ने अपने और अपने परिवारों की जान गंवाई है। इस मुश्किल घड़ी में राष्ट्रगीत वंदे मातरम् से विश्वास की भावना और लोगों में भरोसा जगाने में मदद मिली थी।

लेकिन कोर्ट के इस फैसले से अचानक मुस्लिम धर्म गुरुओं का एक तबका फिर से उठ खड़ा हुआ है कि ये वन्दे मातरम् तो मजहब के खिलाफ है! कुछ मौलाना कह रहे हैं कि इस्लाम अल्लाह को नमन करना सिखाता है माँ-बाप या मुल्क को नहीं! क्या इन मौलानाओं का यह विरोध आज भी मध्ययुगीन समाज के अतार्किक होने का एक रूप है या फिर 1938 में मुहम्मद अली जिन्ना ने जब खुले तौर पर पार्टी के अधिवेशनों में वन्दे मातरम् गाए जाने के खिलाफ बगावत की थी क्या आज भी जिन्ना वाली सोच को जिन्दा रखने का काम हो रहा है? इस एकछत्र धार्मिक नियंत्रणवाद ने इस्लाम के दिल में खतरनाक घाव कर दिया है आज फिर मद्रास कोर्ट के एक फैसले के बाद इसकी कराह सुनी जा सकती है। इस्लाम के झंडे तले दुनिया को देखने की ख्वाहिश रखने वाले लोग ''देश'' या ''देश या देशप्रेम'' जैसी किसी विचाधारा से ही मतलब नहीं रखते?

देश का बँटवारा हुआ। पाकिस्तान बन गया। जिन्ना चले गए। लेकिन वह सोच यहीं रह गयी। अगर चरखा, सत्याग्रह और अहिंसा आजादी की लड़ाई के हथियार थे तो वन्दे मातरम् भी उनमें से एक था। फिर वन्दे मातरम् के लिए आज तक अदालती लड़ाइयाँ क्यों चल रही हैं? सवाल ये भी है कि मुहम्मद अली जिन्ना के नींद से जागने के बाद सिखाया गया कि इस्लाम में वन्देमातरम् हराम है? क्योंकि 1905 में बंगाल विभाजन रोकने के लिए जो बंग-भंग आंदोलन चला उसमें किसी ने हिन्दू मुसलमान के आधार पर वन्दे मातरम् का बहिष्कार नहीं किया। हिन्दू और मुसलमान एक साथ एक सुर में वन्देमातरम् का जय घोष कर बलिदान की वेदी पर चढ़ गये थे, लेकिन बाद में जिन्ना आया और जिन्ना के साथ ये विचार कि वन्देमातरम गीत इस्लाम का हिस्सा नहीं है।

देश के ऊपर प्राण न्योछावर करने वाले वीर अब्दुल हमीद या शहीद अश्फाक उल्लाह खां ने वन्दे मातरम के नारे लगा कर जो शहादतें दीं क्या वह भी अब धर्म के पलड़े में रख के तौली जाएँगी? हालाकि यह स्पष्ट कर दूँ ये सभी मुस्लिमों की आवाज नहीं है लेकिन जिनकी है उनकी सोच पर आज भी मोहमद अली जिन्ना सवार है। जो लोग आज कह रहे हैं कि इस्लाम में एक सजदा है वह सिर्फ उनके खुदा के लिए है चलो इस एकेश्वाद का स्वागत है किन्तु इस एकेश्वरवाद में राष्ट्र के राष्ट्रीय गीत, प्रतीकों और चिन्हों को मजहब के नाम पर क्यों हासिये पर धकेला जा रहा है? आप अपने मजहब से जुड़े रहिये लेकिन राष्ट्र की एकता के मूल्यों से मजहब को दूर रखिये। यहां तो मामूली आलोचनाओं पर भी लोग मजहब के नाम पर भीड़ इकट्ठी कर बाजार को आग के हवाले करने निकल आते हैं। श्रीलंका या इंडोनेशिया के मुसलमान अगर देश के सम्मान में लिखा गया गीत शान से गाते हैं तो क्या वह भारतीयों से कम मुसलमान हो जाते हैं?

कांग्रेस पार्टी के सारे अधिवेशन वन्दे मातरम् से शुरू होते रहे, तब तक जब तक कि मुस्लिम लीग का बीज नहीं पड़ा था। 1923 के अधिवेशन में मुहम्मद अली जौहर ने कांग्रेस के अधिवेशन की शुरुआत वन्दे मातरम् से करने का विरोध किया और मंच से उतर के चले गए। दिलचस्प ये है कि इसी साल मौलाना अबुल कलाम आजाद कांग्रेस के अध्यक्ष थे तभी से जिन्ना का समर्थन करने वालों ने वन्दे मातरम् का विरोध करना शुरू कर दिया। जिन्ना पाकिस्तान चले गये लेकिन वन्देमातरम् का विरोध यहीं रह गया।

रही बात मजहब के आदर की तो वह कौन तय करेगा। कब और कहां से तय होगा। क्योंकि आप कहते हैं कि न हम भारत माता की जय बोलेंगे, न ही वन्देमातरम बोलेंगे। आज मैं इन सभी इस्लाम के कथित ठेकेदारों से पूछना चाहता हूँ कि वे हमें बताएं कि आखिर किस तरह से कुरान देश विरोधी नारेबाजी लगाने वालों को गलत नहीं मानती लेकिन देशभक्ति के नारे लगाना गलत मानती है। वह जरा विस्तार से बताएं कि कुरान की किस आयत में ये सब लिखा है और यदि कुरान में ऐसा कुछ नहीं लिखा है तो कृपया अपनी ओछी राजनीति के लिए इस देश के मुसलमानों को गुमराह करना बंद कर दें। इस्लाम के इन सभी कथित ठेकेदारों की राजनीति की वजह से इस देश में मुसलमानों एवं अन्य धर्मो के लोगों के बीच एक गहरी खाई बनती जा रही है। मैं एक बार फिर इस देश के सभी मुसलमानों से यही कहूँगा कि अपना सही आदर्श चुनें एवं समाज में जहर घोलने वाले इन लोगों से दूर रहे एवं इनका खुल कर विरोध करें।

-राजीव चौधरी

पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगा बाद) महाराष्ट्र तथा गांधेली ग्राम पंचायत के संयुक्त तत्वावधान में 27 जून से 2 जुलाई तक पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. कमल नारायण जी आर्य रायपुर तथा मंत्रपाठ पं. विद्यानिधी शास्त्री ने किया। भजन पं. सुरेन्द्र पालजी नागपुर, पं संदीप जी वैदिक मुजफ्फर नगर के हुए। यज्ञारम्भ से पूर्व ध्वजारोहण गांधेली ग्रम के सरपंच राहुल जी सावंत व माजी जिला परिषद अध्यक्ष आसाराम पाटील तलेकर पोलिस पटेल श्री हरिभाऊ प्रभाकर जी रसाल व संयोजक श्री शेखर चंपालाल जी देसरडा की उपस्थिति में ध्वजगीत गान हुआ। आये हुए विद्वानों को डॉ. धर्मेन्द्रजी शास्त्री दिल्ली द्वारा लिखित 'अग्निहोत्र' ग्रंथ व सत्यार्थ प्रकाश व प्यारा ऋषि दयानन्द चित्रावली सहित सप्रेम भेंट की गयी। शांतिपाठ व आभार से यज्ञ सम्पन्न हुआ।

-दयाराम राजाराम बसैये, मंत्री

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट 427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778 E-mail : aspt.india@gmail.com

Veda Prarthana

God's True Children Are Generous and Selfless

- Acharya Gyaneshwarya

ते हि पुत्रासोऽअदितेः प्र जीवसे मर्त्याय।
ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्।।

Te hi putraso aditeh pra jivase matyarya.
Jyotih yachchhantiajasram.
(Yajur Veda 3:33)

Te hi those persons certainly are aditeh God's or a nation's putraso true children pra jivase who give their life matyarya for the societal, nation's and world's wellbeing. Ajasram such persons constantly all the time, yachchhanti give, spread enlighten others with jyotih light, true knowledge and provide role models.

Those persons certainly are God's or a nation's true children who give their life for the societal, nation's and world's wellbeing. Such persons constantly enlighten others with God's true message based on the knowledge given in the Vedas. In their society and nation, they try to uproot the prevailing injustice, ignorance, blind faith, selfishness, corruption and deprivation of a large segment of the population and replace it with truth, dharma, justice, education, service, kindness, generosity as well as progress and well being of everybody in the society.

Just as after nightfall, under the cover of darkness many prey animals, birds and insects become active, hunt and cruell kill their victims, similarly, when true knowledge of the Vedas is unavailable, ignored or mispresented, then many Non-Vedic sampradayas i.e. religions, gurus or cults emerge and get a chance to propagate their distorted, misdirected, selfish of selfaggrandizing beliefs on others who are gullible. They promote blind faith in their false teachings, miracles and happenings that defy common sense as well as beliefs that cannot stand the scrutiny of truth or logic. For example, in the context of attributes of God, Vedas logically state that God has no shaper or form, nor does God incarnate as a human being. Instead, Non-Vedic religions variably describe a God who has human like shape and form i.e. God is Anthropomorphic and He lives in heaven and from their rules the world. Moreover, God periodically either incarnates as a human being or physically descends from the heaven to guide the faithful. When such non-Vedic teachings propagate, they gradually erode and eclipse tue moral principles such as truth, dharma, correct spiritual knowledge, generosity, self-less service of others and the society, true kindness, justice and other aspects of true Vedic culture. With lack or deprivation of Vedic teahjings such as truth, kindness and generosity, the family, sociey and the nation on the whole suffer unhappiness, lack of peace, dishonesty, deception, distrust and disrespect for authority, worry, fear and insecurity.

There is only one proper solution to all of the sufferings, ill practices and ignorance described in the above paragraph and that is to re-establish true eternal Vedic dharma, culture and way of life in the society and nation. For this goal to succeed, there is the need of generous and selfless God loving learned young and old persons who make a solemn commitment by their thoughts, words and actions to spend rest of their lives to promote ideals of truth and service as well as uproot ignorance, injustice, inequality, discrimination and deprivation prevailing in the society and nation.

Arya (noble persons) do not pay back their debt to the society merely by taking good care of their children and elderly parents when there are so many other mothers, fathers, brothers, sisters and children in the society and nation at large who as stated above suffer from hunger, ignorance, inequality, discrimination, injustice and material deprivation. All of us have a duty to uplift the welfare of everybody in the society.

Dear God, bless our society and nation with such young women and men who are willing to sacrifice everything in their life to readicate all the evils that have permeated our nation as well as will devote their life to promote virtuous Vedic values. May the mothers of our nation instill such virtuous values in their children not only beginning from early childhood but even throughout the pregnancy so that as children grow up they will surrender themselves for the nation's welfare. May the mothers and fathers fill up their children's mind with the value and importance of true eternal Vedic teachings and ideals which unfortunately have been often systematically distorted, suppressed and devalued these days in India and elsewhere. Also, the parents must encourage their children to commit their life body and soul, to restore the glory of eternal Vedic teachings with pledges such as, "I will not be satisfied or be happy merely by serving, nurturing and protecting my family, but will work for the welfare of whole society and nation, I will do my utmost to propagate and spread the correct messages of the Vedas such as the true attributes of God and what is true dharma. I will devote myself to re-spreading Vedic principles, ideals and culture in India and elsewhere so that people again start thanking God by doing true sandhya, yajna, satsang i.e. keeping company of virtuous persons, honoring my teachers and elders, eating vegetarian health enhancing foods, having simplicity and integrity in life, serving others selflesly, sacrificing for others and over all have a principled daily life base on Vedic teachings".

Dear God, finally this is our prayer to you that please fill up our hearts and minds with such desires and corresponding actions that promote all our efforts towards the welfare and uplifting of our society and nation. Please inspire us so we may devote all our energy and if need be sacrifice our life to restore the glory of Vedic dharma and sanskriti (culture and way of life) in the society and nation. May we re-shine the light of true Vedic knowledge in India and the world so we may be able to remove the prevailing darkness of ignorance, injustice, blind faith, selfishness, corruption and deprivation of a large segment of the population and replace it with truth, love, happiness, justice, goodwill, kindness, generosity, bravery, freedom, liberty and peace.

(For benefits of virtuous conduct in life also see mantra# 7,19,24,25,26,27 and 29)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें — संस्कृत पाठ - 27 (अ) — छन्द रचना

गतांक से आगे....

मात्रिक छन्द - संस्कृत में अधिकतर वर्णिक छन्दों का ही ज्ञान कराया जाता है। मात्रिक छन्दों का क्रम । फिर भी हम यहाँ तीन मात्रिक छन्दों का परिचय देकर फिर वर्णिक छन्दों का वर्णन करेंगे ।

दोहा - संस्कृत में इस का नाम दोहडिका छन्द है । इसके विषम चरणों में तेरह-तेरह और सम चरणों में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों के आदि में ।ऽ । (जगण) इस प्रकार का मात्रा-क्रम नहीं होना चाहिए और अंत में गुरु और लघु (ऽ ।) वर्ण होने चाहिए । सम चरणों की तुक आपस में मिलनी चाहिए । जैसे:

।ऽ ।ऽ । । ऽ । ऽ ऽऽ ऽ ऽऽ ।
महद्धनं यदि ते भवेत्, दीनेभ्यस्तद्देहि।
विधेहि कर्म सदा शुभं, शुभं फलं त्वं प्रेहि।।

इस दोहे को पहली पंक्ति में विषम और सम दोनों चरणों पर मात्राचिह्न लगा दिए हैं। इसी प्रकार दूसरी पंक्ति में भी आप दोनों चरणों पर ये चिह्न लगा सकते हैं। अत: दोहा एक अर्धसम मात्रिक छन्द है।

हरिगीतिका - हरिगीतिका छन्द में प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं और अन्त में लघु और फिर गुरु वर्ण अवश्य होना चाहिए। इसमें यति 16 तथा 12 मात्राओं के बाद होती हैं; जैसे

। । ऽ ।ऽऽ ऽ ।ऽ । ।ऽ ।ऽ
ऽ ऽ ।ऽ

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग — पण्डित भोजदत्त जी आगरा वाले आगे निकल गए

श्री पण्डित भोजदत्तजी आर्यपथिक पश्चिमी पंजाब में तहसील कबीरवाला में पटवारी थे। आर्यसमाजी विचारों के कारण पण्डित सालिगरामजी वकील प्रधान मिण्टगुमरी समाज के निकट आ गये। पण्डित सालिगराम कश्मीरी पण्डित थे। कश्मीरी पण्डित अत्यन्त रूढ़िवादी होते हैं इसी कारण आप तो डूबे ही हैं साथ ही जाति का, इनकी अदूरदर्शिता तथा अनुदारता से बड़ा अहित हुआ है। आज कश्मीर में मुसलमानों ने (कश्मीरी पण्डित ही तो मुसलमान बने) इन बचे-खुचे कश्मीरी ब्राह्मणों का जीना दूभर कर दिया और अब कोई हिन्दु इस राज में-कश्मीर में रह ही नहीं सकता।

पण्डित सालिगराम बड़े खरे, लगनशील आर्यपुरुष थे।आपने बिरादरी की परवाह न करते हुए अपने पौत्र का मुण्डन-संस्कार विशुद्ध वैदिक रीति से करवाया। ऐसे उत्साही आर्यपुरुष ने पण्डित भोजदत्तजी की योग्यता देखकर उन्हें आर्यसमाज के खुले क्षेत्र में आने की प्रेरणा दी। पण्डित भोजदत्त पहले पंजाब सभा में उपदेशक रहे फिर आगरा को केन्द्र बनाकर आपने ऐसा सुन्दर, ठोस तथा ऐतिहासिक कार्य किया कि सब देखकर दंग रह गये। आपने मुसाफिर पत्रिका भी निकाली। सरकारी नौकरी पर लात मार आपने आर्यसमाज की सेवा का कण्टकाकीर्ण मार्ग अपनाया। इस उत्साह के लिए जहाँ पण्डित भोजदत्तजी वन्दनीय हैं वहाँ पण्डित सालिगरामजी को हम कैसे भुला सकते हैं जिन्होंने इस रत्न को खोज निकाला, परखा तथा उभारा।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

श्रावणी/वेद प्रचार पर्व

आर्य समाज पंखा रो 'सी' ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली श्रावण पूर्णिमा (रक्षाबन्धन) पर दिनांक 7 से 15 अगस्त के मध्य श्रावणी/वेद प्रचार पर्व का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य रामचन्द्र आर्य (सोनीपत) जी प्रवचन एवं श्री दिनेश पथिक (अमृतसर) एवं श्रीमती मिथलेश शास्त्री (हरिद्वार) भजन प्रस्तुत करेंगी। कार्यक्रम के अन्तर्गत ध्वजारोहण/श्रावणी पर्व/रक्षाबन्धन एवं हैदराबाद सत्याग्रह, बाल/बालिका/आर्यवीर/ आर्य वीरांगना सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (सामवेद यज्ञ) समारोह आयोजित किये जाएंगे। ***-शिव कुमार मदान, प्रधान***

विद्यार्थी अवार्ड दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद के तत्वावधान में 15 जुलाई को महात्मा के. एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय में 'विद्यार्थी अवार्ड दिवस'' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती सीमा त्रिखा मुख्य संसदीय सचिव एवं अध्यक्षता श्रीमती सुमन बाला महापौर ने की। श्रीमती सीमा त्रिखा ने अपने कर कमलों से विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया गया। ***- मन्त्री***

श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी

आर्य समाज सुन्दर विहार दिल्ली में दिनांक 7 से 15 अगस्त 2017 के मध्य श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वार्षिक गायत्री महामंत्र जप एवं हवन का आयोजन होगा। 13 अगस्त को आचार्य ओम प्रकाश शास्त्री जी एवं 15 अगस्त को आचार्या कल्पना आर्या जी के वैदिक प्रवचन होंगे।

- अमर नाथ बत्रा, मंत्री

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्य समाज मगरा पूंजला द्वारा त्रिदिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम 17 से 19 जुलाई के बीच आयोजित किया गया। इस अवसर पर राजस्थान आर्य वीर दल के संचालक श्री सत्यवीर आर्य (अलवर) ने विभिन्न विद्यालयों के लगभग 1500 विद्यार्थियों को राष्ट्रभक्ति, वैदिक संस्कृति स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी एवं योगासन, प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में आर्य समाज प्रधान श्री सम्पतराज देवड़ा एवं उपप्रधान हरि सिंह सांखला ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी का धन्यवाद किया। ***-सम्पतराज देवड़ा, प्रधान***

आर्यसमाज हनुमान रोड का वेद प्रचार समारोह

आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का वेद प्रचार समारोह 7 से 14 अगस्त तक आयोजन किया जा रहा है। प्रवचन डॉ. अन्नपूर्णाजी के होंगे। इस अवसर पर 14 अगस्त को ''आदर्श एवं अनुकरणीय योगिराज श्रीकृष्ण'' विषय पर विभिन्न विद्यालयों के बच्चों की भाषण प्रतियोगिता आयोजित होगी। विजेता बच्चों को पुरस्कार भी प्रदान किए जाएंगे।

-विजय दीक्षित, मंत्री

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज सुन्दर विहार, दिल्ली

प्रधान	- श्री केवल मान क्षेत्रपाल
मंत्री	- श्री अमर नाथ बत्रा
कोषाध्यक्ष	- श्री प्रहलाद सिंह

रामगली आर्य समाज हरिनगर घंटाघर

प्रधान	- श्रीमती राजेश्वरी आर्या
मंत्री	- श्री श्रीपाल आर्य
कोषाध्यक्ष	- श्री हृदयेश शर्मा

आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव

प्रधान	- लक्ष्मण पाहूजा
महामन्त्री	- श्री प्रभु दयाल चुटानी
कोषाध्यक्ष	- श्री नरवीर लाल चौधरी

डॉ. शशि जी द्वारा रचित पुस्तकों का लोकार्पण

भारतीय विद्या भवन तथा ब्रज संस्कृति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. श्याम सिंह शशि ने राम-वशिष्ट, कृष्ण-संदीपन तथा आधुनिक युग में दयानन्द-विरजानन्द व विवेकानन्द, राम कृष्ण परमहंस आदि के गुरु-शिष्य संदर्भ देकर आज की शिक्षा प्रणाली में टीचर-टॉट स्टाइल पर कई प्रश्न खड़े किय। उनका विश्वास है कि मूल्य परक शिक्षा के सही कार्यान्वयन से समाज में बढ़ते अपराधों पर रोक लगाई जा सकती है। इस अवसर पर डॉ शशि ने अनेक पुस्तकों तथा पत्रिकाओं का लोकार्पण किया। समारोह की अध्यक्षता श्री अशोक प्रधान (आई.ए.एस. से. नि) निदेशक भारतीय विद्या भवन ने की। उन्होंने ब्रज संस्कृति संस्थान के अध्यक्ष प्रो. रामनारायण गोयल को साधुवाद दिया।

-डॉ. ममता सिंह, मीडिया रिसर्च सेन्टर

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगुढ (हरि.) का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव 1 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2017 तक अधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी के सान्निध्य में आयोजित हो रहा है जिसके अन्तर्गत 51 कुण्डों में यज्ञ पूर्णाहुति दी जाएगी। ***- मन्त्री***

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ श्रावणी उपाकर्म

आर्य समाज मुम्बई में दिनांक 7 से 14 अगस्त 2017 के मध्य यजुर्वेद यज्ञ श्रावणी उपाकर्म पर्व आयोजन होगा। **- श्रवण कुमार शर्मा, यज्ञ संयोजक**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 हेतु आवेदन - पत्र

श्री प्रकाश जी आर्य
मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड
नई दिल्ली - 110001

महोदय,

मैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2017 में भाग लेने जाना चाहता हूँ/चाहती हूँ। इस संबंध में आपके द्वारा प्रेषित जानकारी को मैंने अच्छी तरह पढ़ लिया है तथा उसमें दी गई सभी बातें मुझे स्वीकार हैं। मेरी अन्य जानकारी निम्न प्रकार है :

नाम:____________ पिता/पति का नाम:____________

आयु:______ जन्म दिनांक : ____________ व्यवसाय :____________

स्थाई पता : ____________

____

टेलीफोन व मोबाईल नम्बर : ____________ ई.मेल :____________

मैं आर्यसमाज____________ का/की सदस्य हूँ।

यात्रा नं. -1 दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 1 में दिल्ली से शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -1 कोलकता से

मैं यात्रा नं. 1 में कोलकता से शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, 4 कलर फोटोग्राफ, वीजा फार्म तथा 2 कोरे लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

यात्रा नं. -2 केवल दिल्ली से

मैं यात्रा नं. 2 में शामिल होना चाहता/चाहती हूँ। मैं इस यात्रा की पूर्ण राशि ₹ ____________/- का बैंक ड्राफ्ट साथ में भेज रहा हूँ/रही हूँ। साथ में अपना पासपोर्ट, चार कलर फोटोग्राफ (35X45mm) बर्मा के लिये, 4 कलर फोटोग्राफ (35X50mm) मलेशिया के लिये, बर्मा का वीजा फोर्म तथा दो कोरो लैटरहैड भेज रहा हूँ/रही हूँ। कृपया मेरी यात्रा आरक्षित करके मुझे सूचना देने का कष्ट करें।

मेरे द्वारा दी गई उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है।

आर्यसमाज की अनुमति (रबर स्टाम्प के साथ)

भवदीय/भवदीया

(आवेदक के हस्ताक्षर)

दिनांक : ____________

GOVERNMENT OF THE REPUBLIC OF THE UNION OF MYANMAR
MINISTRY OF IMMIGRATION AND POPULATION

DIRECTORATE OF IMMIGRATION AND NATIONAL REGISTRATION
IMMIGRATION DEPARTMENT
APPLICATION FOR ENTRY TOURIST VISA

PHOTO

1. Name in full (In Block Letters) ____________
2. Father's Name in full ____________
3. Nationality ____________ 4. Sex ____________
5. Date of birth ____________ 6. Place of birth ____________
7. Occupation ____________
8. Personal description
   (a) Color of hair ____________ (b) Height ____________
   (c) Color of eyes ____________ (d) Complexion ____________
9. Passport
   (a) Number ____________ (b) Date of issue ____________
   (c) Place of issue ____________ (d) Issuing authority ____________
   (e) Date of expiry ____________
10. Permanent address ____________
11. Address in Myanmar ____________
12. Purpose of entry into Myanmar ____________
13. Attention for Applicants
    (a) Applicant shall abide by the Laws of the Republic of the Union of Myanmar and shall not interfere in the internal affairs of the Republic of the Union of Myanmar.
    (b) Legal actions will be taken against those who violate or contravene any provision of the existing laws, rules and regulations of the Republic of the Union of Myanmar.

I hereby declare that I fully understand the above mentioned conditions, that the particulars given above are true and correct and that I will not engage in any activities irrelevant to the purpose of entry stated herein.

Date ____________ **Signature of Applicant**

(FOR OFFICIAL USE ONLY)

Visa No. ____________ Date ____________
Visa Authority ____________

Date ____________
Place New Delhi, Republic of India

Embassy of the Republic of the Union of Myanmar, New Delhi

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 31 जुलाई, 2017 से रविवार 6 अगस्त, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 3/4 अगस्त, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 2 अगस्त, 2017

प्रतिष्ठा में,

आर्य समाज रजोकरी का तीसरा वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र ग्राम रजोकरी में 17 जुलाई 17 को आर्य समाज की स्थापना और तृतीय वार्षिकोत्व का आयोजन किया गया। श्रद्धामय

वातावरण में परिपालित करके एक नया कदम प्रेरणास्पद उठाया गया। वार्षिकोत्सव का उद्घाटन ध्वजारोहण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्य भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य और श्री हरीश आर्य का ओजस्वी भजन माताओं-बहनों तथा आर्य सज्जनों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। डॉ. मुकेश आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया। आयोजन के सूत्रधार श्री दिलाप कुमार, गुरुविरजानन्द संस्कृत कुलम् के ब्रह्मचारीगण तथा आचार्य भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

- आचार्य धनञ्जय शास्त्री

श्रावणी पर्व एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज एल-ब्लॉक (आनन्द विहार) हरिनगर, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव 15 अगस्त 2017 को यज्ञ, भजन एवं प्रवचन के साथ आयोजित रहा है। प्रवचन आचार्य शिव नारायण उपाध्याय जी एवं भजन पं. नन्दलाल निर्भय एवं साथी करेंगे। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुवंर पाल शास्त्री जी होंगे। *-महेन्द्र सिंह, मंत्री*

चातुर्मास श्रावणी उपाकर्म

आर्य समाज मन्दिर अशोक विहार, फेज-1 दिल्ली के तत्त्वावधान में चातुर्मास श्रावणी उपाकर्म एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर गीता ज्ञान कथा आचार्य अखिलेश्वर जी भारद्वाज, अध्यक्ष वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम (हरिद्वार) के सानिध्य में 12 से 15 अगस्त के बीच आयोजित होगी।

-जीवन लाल आर्य, मंत्री

श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महायज्ञ

आर्य समाज कालकाजी, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महायज्ञ, भक्ति संगीत एवं वेद कथा आचार्य अखिलेश्वर जी एवं संगीताचार्य श्री भानु प्रकाश जी के सानिध्य में 3 से 6 अगस्त के मध्य आयोजित होगी।

-सुधीर मदान, मंत्री

मायापुरी क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियों का पुनः संचालन

आपको जानकर हर्ष होगा कि मायापुरी क्षेत्र में आर्यसमाज की गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। इसके अन्तर्गत मायापुरी फेज-1 के मिथुन पार्क में साप्ताहिक यज्ञ एवं प्रवचन कार्य प्रातः 8:30 से 10 बजे तक किया जा रहा है। निकटवर्ती महानुभाव अवश्य पहुंचकर प्रचार कार्य में सहयोगी बनें। *- रजनीश वर्मा, संयोजक(9811362087)*

जन्माष्टमी के अवसर पर वितरित करें
योगीराज श्रीकृष्ण का प्रेरक जीवन

प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह